समुच्चय अर्घ

(गीता छंद)

मैं देव श्री अरहंत पूजुं, सिद्ध पूजुं चावसों;
आचार्य श्री उवझाय पूजूं,साधु पूजुं भाव सों।
अरिहंत भाषित बैन पूजुं, द्वादशांग रचे गनी;
पूजुं दिगंबर गुरूचरन, शिव हेतु सब आशा हनी।
सर्वज्ञभाषित धर्म दशविधि, दयामय पूजुं सदा;
जजी भावना षोडश रत्नत्रय, जा विना शिव नहि कदा।
त्रैलोक्यके कृत्रिम अकृत्रिम, चैत्य चैत्यालय जजूं;
पंचमेरू नंदीश्वर जिनालय, खचर सुर पूजित भजूं।
कैलास श्री सम्मेद श्रीगिरनार गिरि पूजूं सदा;
चंपापुरी पावापुरी पुनि, और तीरथ सर्वदा।
चौबीस श्री जिनराज पूजूं बीस क्षेत्र विदेह के;
नामावली इक सहस वसु जय, होय पति शिवगेहके।

(दोहा)

जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल लाय
सर्व पूज्य पद पूजहूं, बहु विधि भक्ति बढाय

ॐ ह्रीं श्री भावपूजा, भाववंदना, त्रिकालवंदना करवी करावी, भावना भाववी, श्री अरहंतजी, सिद्धजी, आचार्यजी, उपाध्यायजी, सर्व साधुजी पंचपरमेष्ठीभ्यो नमः। प्रथमानुयोग-करणानुयोग-चरणानुयोग द्रव्यानुयोगेभ्यो नमः। दर्शनविशुध्धिआदि षोडशकारणेभ्यो नमः उत्तम क्षमादि दशलक्षणादि धर्मेभ्यो नमः। सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यक चारित्रेभ्यो नमः। जलविशे, थलविशे, आकाशविशे, गुफाविशे, पहाडविशे, नगर-नगरीविशे, ऊर्ध्वलोक मध्यलोक पाताललोक विशे बिराजमान कृत्रिम अकृत्रिम जिन चैत्यालय जिन-बिम्बेभ्यो नमः। विदेहक्षेत्रे विद्यमानबीसतीर्थंकरेभ्यो नमः। पांच भरत पांच ऐरावत दशक्षेत्र संबंधी तीस चौबीस ना सातसोबीस जिनेन्द्रभ्यो नमः। पंचमेरूसंबंधी अस्सी जिनचैत्यालयेभ्यो नमः। श्री सम्मेदशिखर, कैलाश, चंपापुर, पावापुर, गिरनार आदि सिद्ध क्षेत्रेभ्यो नमः। श्री जैनबद्रि, मुडबद्रि आदि अतिशय क्षेत्रेभ्यो नमः। श्री चारण-ऋद्धिधारी सप्त परमऋषिभ्यो नमः। ॐ ह्रीं श्रीमंतंभगवंतं कृपालसंतं श्री वृषभादि महावीर पर्यन्तं चर्तुविंशति तीर्थंकर परमदेव आद्यानां अद्ये जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे आर्यखंडे नाम्निनगरे मासानामुत्तमे मासे-पक्षे-वासरे-तिथी सिद्ध शीला पर बिराजमान सर्व सिद्धेभ्यो अनर्ध्यपद प्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।